बनास जन

शताब्दी स्मरण

अमरकान्त

बनास जन

साहित्य-संस्कृति का संचयन

शताब्दी स्मरण : अमरकान्त

परामर्श : प्रो. काशीनाथ सिंह, वाराणसी
डॉ. ममता कालिया, दिल्ली
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, जयपुर
प्रो. माधव हाड़ा, उदयपुर
श्री महादेव टोप्पो, राँची

सम्पादक : पल्लव

सहयोग : गणपत तेली, भँवरलाल मीणा

सहयोग राशि : 200 रुपये (यह अंक)–डाक द्वारा मँगवाने पर–230 रुपये
400 रुपये (संस्थागत)–डाक द्वारा मँगवाने पर–430 रुपये
7000 रुपये–आजीवन (व्यक्तिगत)
12,000 रुपये–आजीवन (संस्थागत)

समस्त पत्र व्यवहार : पल्लव
393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एंड डी
कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
ह्वाट्सअप : +91–8130072004 (केवल लिखित संदेश हेतु)
ई-मेल : banaasjan@gmail.com
वेबसाइट : www.notnul.com

कृपया रचनाएँ भेजने के लिए सिर्फ ई-मेल का उपयोग करें। आग्रह है कि इस संबंध में पूछताछ न करें। ‘बनास जन’ में सभी रचनाओं का स्वागत है।

नोट : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
संपादन एवं सह संपादन पूर्णतः अवैतनिक।
समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक पल्लव द्वारा 393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एण्ड डी, कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 से प्रकाशित और प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, झिलमिल इंडस्ट्रीयल एरिया, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095 से मुद्रित।

BANAAS JAN
Peer Reviewed Journal
(A Collection of Literature)

ISSN 2231–6558

अनुक्रम

अपनी बात 5

स्मृतियों में अमरकान्त

लेखकों के लेखक — ममता कालिया — 9
सादगी का वैभव — हरीश चन्द्र पाण्डे — 13
अमरकान्त जी — मनोज कुमार पांडेय — 25

कृतियों का पाठ

ऐसे हैं देश के लोग — विज्ञान भूषण — 29
अमरकान्त की अ-मर कथा — भास्कर लाल कर्ण — 33
प्रेमचन्द की परम्परा, नयी कहानी आन्दोलन और अमरकान्त — उमाशंकर चौधरी — 38
अपने समय से आगे की कहानियाँ — ज्योति चावला — 46
सामाजिक यथार्थ और मानवीय संवेदना की परख — शम्भुनाथ मिश्र — 51

कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ

अमरकान्त का पत्र पत्नी गिरिजा देवी वर्मा के नाम — 56
अमरकान्त का पत्र कमलाप्रसाद के नाम — 57
अमरकान्त का पत्र वीरेंद्र यादव के नाम — 58
अमरकान्त का पत्र हिमांशु जोशी के नाम — 58
अमरकान्त का पत्र नामवर सिंह के नाम — 59
अमरकान्त का पत्र रमेश उपाध्याय के नाम — 59

कहानीकार अमरकान्त

अमरकान्त की पहली कहानी — अजितकुमार — 62
मध्यवर्गीय संवेदना और सरोकारों के कथाकार — अरविन्द कुमार — 65
जीवन की द्वंद्वात्मकता के कथाकार — रामकली सराफ — 74
अमरकान्त की कहानियों में मूल्यों का सौंदर्य — रीता सिन्हा — 83
युगीन सामाजिक अंतर्विरोधों की कहानियाँ — शशिभूषण मिश्र — 90
विपन्नता में जुझारू जीवटता के कथाकार — विमलेश शर्मा — 94
भूख का भयावह आख्यान — आनंद पांडेय — 103
मध्य वर्ग के अमर कथाकार — बिजय कुमार साव — 108
मध्यवर्ग की दास्तान वाया अमरकान्त — अनुपम कुमार — 118
स्त्री सन्दर्भ और अमरकान्त की कहानियाँ — अंकिता तिवारी — 122
जातिवादी यथार्थ और अमरकान्त की कहानियाँ — अमिष वर्मा — 127

उपन्यासकार अमरकान्त

सूखा पत्ता

ये सूखे पत्ते नहीं जमाने पे तब्सिरे हैं — मेधा नैलवाल — 133
मध्यमवर्गीय महत्त्वाकांक्षाएँ और कायरताएँ — उज्ज्वल शुक्ल — 141

काले-उजले दिन
भटकती राहों में मंजिल की तलाश | नीलोफर | 144

कटीली राह के फूल
युवा जीवन का यथार्थ और स्वप्न | भावना मासीवाल | 149

ग्रामसेविका
गाँवों के बदलाव का सफ़रनामा | रेनू त्रिपाठी | 153
नये गाँव की तसवीर | दीपिका दूबे | 157

सुखजीवी
सच्चे दृष्टिबोध की तलाश | लोकेश कुमार गुप्ता | 163

बीच की दीवार
रिश्तों की जटिलताओं का प्रतिबिम्बिन | धर्मेंद्र प्रताप सिंह | 167
काले-उजले के बीच की दीवार पर खड़े धुमैले पात्रों का कोरस | संजीव कुमार दुबे | 171

सुन्नर पांडे की पतोह
परित्यक्ता का यथार्थ | ऊर्जा श्रीवास्तव | 177
स्त्री व्यक्तित्व की खोज | एकता मंडल | 181
दुख ही जीवन की कथा रही | प्रभाकरन हेब्बार इल्लत | 188

आकाश पक्षी
भारतीय समाज का सामंती आख्यान | विनीत काण्डपाल | 201

इन्हीं हथियारों से
बापू अपनी चिंगारी दे | आशीष कुमार सिंह | 205
सघनता और सहजता | अमिय बिन्दु | 212
भारतीय राष्ट्रवाद के गौरव की रूमानी याद | जीतेन्द्र गुप्ता | 220
धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे बलिया-क्षेत्रे ....
स्वाधीनता संग्राम का मानवीय आख्यान | रेणु व्यास | 231
असाधारण के विरुद्ध साधारण के संघर्ष का आख्यान | राम विनय शर्मा | 243

विदा की रात
साम्प्रदायिक सौहार्द का ताना-बाना | कुलभूषण मौर्य | 255
अतीत और भविष्य के बीच | मनीष कुमार मिश्रा | 259

लहरें
कापर करूँ सिंगार पिया मोर आँधर | वीरेंद्र प्रताप | 265

कथेतर विधाओं में अमरकान्त
श्रीराम से अमरकान्त तक की यात्रा | रविरंजन | 271
स्मृति की तापशिला पर | गायत्री यादव | 279
लेखकों की ‘दोस्ती’ | आशीष कुमार तिवारी | 283

अमरकान्त का रचना संसार | 288

अपनी बात

अमरकान्त (1 जुलाई 1925--17 फरवरी 2014) स्वातंत्र्योत्तर भारत के उन महान लेखकों में अग्रगण्य हैं जिन्होंने कथा साहित्य में अपने समय और समाज को प्रामाणिकता और विश्वसनीयता के साथ चित्रित किया। नयी कहानी आंदोलन में जिस तिकड़ी की सबसे अधिक चर्चा हुई वह मोहन राकेश, कमलेश्वर और राजेंद्र यादव की थी लेकिन नयी कहानी आंदोलन इस तिकड़ी तक सीमित आंदोलन नहीं था अपितु उसमें भैरवप्रसाद गुप्त के नेतृत्व में अनेक महत्त्वपूर्ण कहानीकारों ने भागीदारी की। इन महत्त्वपूर्ण कथाकारों में भीष्म साहनी, शेखर जोशी और अमरकान्त ऐसे कथाकार हैं जो चर्चित तिकड़ी के समानांतर नयी कहानी का एक ऐसा कैनवास बनाते हैं जिसमें देश के मामूली लोगों की जिंदगी और उनके संघर्ष सबसे प्रमुख हैं। यही नहीं नयी कहानी का वास्तविक चित्र इन लोगों के साथ मन्नू भंडारी, विद्यासागर नौटियाल, रांगेय राघव और शैलेश मटियानी की कहानियों को जोड़कर ही बनता है। इन सभी कहानीकारों ने भारत की बहुसंख्यक जनता की आशा-निराशा और हर्ष-विषाद का चित्रण अपनी कहानियों में बेहद प्राणवान ढंग से किया है कि अपने लिखे जाने के बरसों बाद भी इन कहानियों को पढ़ते हुए पाठकों को अपना समय और समाज दिखाई देता है। यह विडंबना ही है कि इन लोगों की कहानियों पर साधारणता का आरोप लगाया गया जैसे कि साधारण लोगों पर लिखना साधारण लिखना ही हो जाता हो।

अमरकान्त ने इलाहाबाद में रहते हुए प्रगतिशील लेखक संघ की गोष्ठियों में जाना शुरू किया और यही से उनके कहानी लेखन की भी शुरुआत हुई। इस अंक में अजितकुमार की कलम से अमरकान्त की पहली कहानी लिखे जाने का पूरा प्रसंग पढ़ा जा सकता है। यह ठीक है कि किसी आकस्मिक घटना या प्रेरणा से कभी कभी कोई व्यक्ति रचनाशील हो जाता है लेकिन उसे सच्चा रचनाकार बनने के लिए दृष्टि और साधना की आवश्यकता पड़ती है। ऐसी दृष्टि जिसमें व्यापक मनुष्यता के लिए स्थान हो और साधना वह जो लेखक को कला की कसौटी पर भी खरा सिद्ध करे। अमरकान्त का जीवन और लेखन इसका गौरवशाली उदाहरण है। उन्होंने एक पत्रकार के रूप में अपना जीवन जिया और युवावस्था में शुरू हुआ उनका लेखन जीवन के अंतिम समय तक चलता है। लगभग नब्बे वर्ष की आयु में वे दिवंगत हुए तब तक उनके ग्यारह उपन्यासों और लगभग सवा सौ कहानियों का प्रकाशन हो चुका था। उन्होंने बच्चों और प्रौढ़ साक्षरता के लिए भी लेखन कार्य किया। उनके प्रखर और स्वाभिमानी व्यक्तित्व का परिचय देने वाले अनेक प्रसंग मिलते हैं जो मुश्किल दिनों में भी लेखक की गरिमा का उदाहरण बन गए हैं।

अमरकान्त का अवदान कहानी साहित्य के लिए कहीं बड़ा, अधिक और मौलिक है। उनकी जिन कहानियों को सादा और शिल्पहीन समझा गया असल में वे कारीगर की ऐसी कृतियाँ हैं जिनमें बुनावट के निशान नहीं दिखाई देते। वे सामान्य बोलचाल के लहजे और रोजमर्रा के मुहावरों से अपने समय और

समाज की वास्तविक विडंबनाओं को दर्ज करते हैं। वे नयी कहानी के रोमानी फैशन वाली कहानियाँ नहीं लिखते जहाँ अदृष्ट की खोज की पुकार को जीवन और मनुष्यता की पुकार समझ लिए जाने का आग्रह हो। वे जीवन के असली, खुरदुरे और कठोर सत्य से भिड़ने की कला संभव करते हैं जब पैंतालीस साल का आदमी अधेड़ बूढ़े में बदल गया है और उसकी पत्नी भय से ग्रस्त है। इस व्याधि का कारण भूख है, बेरोजगारी है, निर्धनता है। आकस्मिक नहीं कि उनके दूसरे ही कहानी संग्रह का शीर्षक 'देश के लोग' है। वे देशप्रेम की वायवीय रोमानियत में नारे लगाने वाली कहानियाँ नहीं लिख रहे थे बल्कि अभी-अभी आजाद हुए और तरक्की का शोर मचाते राजनेताओं को अपने लोगों का हाल बता रहे थे। नेहरू युग के सुनहरे दिखाई देने उस समय की स्याह सच्चाइयों को सबसे प्रामाणिक, जीवंत और मानवीय स्पर्शों के साथ अमरकान्त ने अपनी कहानियों में दर्ज किया है। जिंदगी से जोंक की तरह चिपकने वाले रजुआ जैसे लोगों के जीवन में उतरने का साहस कितने कलाकारों में होता है? याद आता है कि इसी दौर में हरिशंकर परसाई ने जलेबी बनाने वाले बदसूरत हलवाई की कहानी लिखी थी जिसे एक लड़की से प्रेम हो गया था। सामान्य बोलचाल की भाषा होने पर भी अमरकान्त के लेखन में उत्तर भारत की बोलियों के सैकड़ों मुहावरे और हजारों कहावतें हैं, व्यंग्य उनका अचूक हथियार है और वे पात्रों के स्थान पर परिस्थितियों को पैदा करने वाले कारणों पर क्षोभ करते हैं।

कहा जाता है कि अमरकान्त प्रेमचंद की परम्परा के कथाकार हैं। देखा जाए तो भारत का कौन कथाकार होगा जो इस परम्परा में नहीं है? प्रेमचंद ने कहानी और लेखन के जो मैयार तय कर दिए उनके पार जाना इसलिए संभव नहीं है कि उन्होंने भारतीय समाज के लिए साहित्य का वास्तविक आशय स्थापित किया था। उन्होंने बताया था कि हमारे साहित्य के नायक कौन हो सकते हैं और क्यों। उन्होंने इस साहित्य के उद्देश्यों को फिर परिभाषित कर दिया था जहाँ किसी भी तरह के भ्रम की गुंजाइश नहीं है। यही नहीं वे भारत महादेश की दो सबसे बड़ी भाषाओं के साझे कथाकार थे और दो संस्कृतियों के साझीदार भी। उन्होंने बताया कि भारत जैसे विविधताओं वाले देश में साहित्य कैसा होना चाहिए और आश्चर्य नहीं कि अपने लेखन से उन्होंने लाखों पाठकों को बाँध दिया। अमरकान्त इस काम को आगे बढ़ाते हैं और अपने देश के उन लाखों विपन्न, वंचित और पीड़ित लोगों का जीवन शब्दों में दर्ज करते हैं। वे इन लोगों से पाठकों को प्रेम करना सीखाते हैं। वे बताते हैं कि रजुआ जैसे गंदगी में पड़े लोग भी हमारे देशवासी हैं और उनसे नफरत करने से देश को कुछ हासिल नहीं होगा। वे जाति से मुँह नहीं छिपाते और उनके पात्र जरूरत पड़ने पर आगे बढ़कर अपनी जाति की घोषणा करते हैं क्योंकि अमरकान्त को मालूम है कि भारतीय समाज में जाति एक बड़ी सचाई है। उनकी जिस सादाबयानी को शिल्पविहीनता समझ लिया जाता है वह समाज को बाँधने, जोड़ने और एक करने का शिल्प है। आकस्मिक नहीं कि अमरकान्त ने युवा बेरोजगारी पर अंत तक कहानियाँ लिखीं और अपने देश के लोगों की निराशा-हताशा को भी दर्ज करते रहे।

भूख उनकी कहानियों में बार बार आने वाला विषय है जिससे मालूम होता है कि अमरकान्त की दृष्टि कितनी जमीनी और यथार्थ है। वेल्टहंगरहिल्फ द्वारा जारी वैश्विक भूख सूचकांक (जी.एच.आई.) 2024 की रिपोर्ट के अनुसार भूख के मामले में भारत की स्थिति विशेष रूप से बांग्लादेश, नेपाल और श्रीलंका जैसे पड़ोसी देशों से तुलनात्मक रूप में चिंताजनक है, जो भूखमरी के स्तर के मामले में 'मध्यम' श्रेणी में आते हैं। यह रिपोर्ट बताती है कि भारत की 13.7 प्रतिशत आबादी कुपोषित है, जबकि पाँच साल से कम उम्र के 35.5 प्रतिशत बच्चे बौनेपन से ग्रसित हैं। यही नहीं 18.7 प्रतिशत बच्चे बाल दुर्बलता से पीड़ित हैं और 2.9 प्रतिशत बच्चे अपने पाँचवें जन्मदिन पूर्व ही मृत्यु के शिकार हो जाते हैं। उक्त आँकड़े बताते हैं कि भूख और गरीबी भारत के लाखों नागरिकों के लिए आज भी सबसे बड़ी समस्या है जिसका समाधान नहीं हुआ है। क्या हम अन्न के उत्पादन में पीछे रह गए हैं? यहीं भारत

सरकार की सूचना है कि एफएओ (2023) के अनुसार भारत दुनिया में अनाज उत्पादों का सबसे बड़ा उत्पादक और सबसे बड़ा निर्यातक है। (https://apeda.gov.in) फिर समस्या कहाँ है? क्या यह समाज में बढ़ती गैर बराबरी के कारण हो रहा है? यहाँ यह तथ्य भी हमारे सामने है कि हमारी सरकार प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना तहत लगभग 81.35 करोड़ लाभार्थियों (अर्थात अंत्योदय अन्न योजना (एएवाई) परिवार और प्राथमिकता वाले परिवार (पी.एच.एच.) लाभार्थियों) को उनकी पात्रता के अनुसार (अर्थात् प्रति माह प्रति एएवाई परिवार पैंतीस किलोग्राम खाद्यान्न और प्राथमिकता वाले परिवार के मामले में प्रति माह प्रति व्यक्ति पाँच किलोग्राम खाद्यान्न) दिनांक 1 जनवरी, 2024 से अगले पाँच वर्षों के लिए निःशुल्क खाद्यान्न उपलब्ध कराना जारी रखने का निर्णय लिया है।(https://dfpd.gov.in) इन तथ्यों से स्पष्ट होता है कि अमरकान्त की कहानियाँ भूख के सवाल को बार बार उठाती हैं तो यह एक जरूरी काम है जो किसी भी देशप्रेमी लेखक को करना चाहिए। उनकी एक कहानी में आया भूखमरी का दृश्य है, ''सबके चेहरे सूख गये। गाल पिचक गये। आँखें काले गड़हों में धँस गयीं। बच्चों में इतनी ताकत नहीं रह गयी थी कि वे रो सकें। लोग-बाग गाँव छोड़कर भागने लगे। जो बचे वे घास-पात की जड़ों को उखाड़-उखाड़कर खाने लगे। कुछ नहीं मिलता तो पेड़ के पत्तों का काढ़ा बनाकर पी जाते। डर, तकलीफ, और कमजोरी से कोई भी दूसरों से न बोलता था और न एक दूसरे की ओर देखता ही था। दिन में स्यार और कुत्ते डहक-डहककर रोने लगे....।''

अमरकान्त का लेखन याद दिलाता है कि अपने समय की सत्ता से सवाल करना किसी भी लेखक का प्राथमिक कर्त्तव्य है। वे इन सवालों को रचनाओं में अनुस्यूत कर देते हैं और भूख, निर्धनता, गैर बराबरी, हिंसा, युवाओं की लाचारी जैसे अनेक सवाल स्थाई रूप से सबसे जवाब माँगते हैं। इस लिहाज से वे प्रेमचन्द ही नहीं भारतीय साहित्य की महान परम्परा की याद दिलाते हैं जिसमें तुलसीदास रामराज्य और रैदास बेगमपुर की कल्पना कर गए हैं। उनके उपन्यास भी साधारण मनुष्यता के असाधारण स्वप्नशीलता के उदाहरण हैं। बलिया में 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान हुई क्रांति का भव्य चित्र उन्होंने अपने उपन्यास 'इन्हीं हथियारों से' में प्रस्तुत कर दिया है। इसी उपन्यास में एक जगह आया है, ''हमारे देश में जहाँ अनेक धर्म और जातियाँ हैं, कैसी सरकार होगी? नस्लवादी राष्ट्रीयता यहाँ के लिए उपयुक्त होगी या धार्मिक राष्ट्रीयता? अथवा ऐसा जनतंत्र जिसमें सभी धर्मों और जातियों को समान अधिकार प्राप्त हों और शोषित-गरीबों की उन्नति पर ध्यान दिया जाता हो?'' फिर एक और स्थान पर अमरकान्त एक पात्र के हवाले से कहते हैं, ''देखिए, आधुनिक बनिये। इसका मतलब दूसरों की नकल नहीं, अपने देश की प्राचीन सड़ी-गली, अप्रासंगिक एवं बेकाम चीजों की भी नहीं। इसका अर्थ है अपने इतिहास, संस्कृति और समाज से सबक लेते हुए अपने अंदर और दूसरों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना और नयी चुनौतियों का नये संकल्पों के साथ सामना करना।'' उक्त उद्धरण बताते हैं कि बतौर लेखक और देशप्रेमी नागरिक अमरकान्त की मूल चिंता क्या थी। 'इन्हीं हथियारों से' देश का रूपक गढ़ता है और देश व राष्ट्र की बहसों को हमारे समक्ष फिर खड़ा करता है। उपन्यास विधा की शक्ति और सामर्थ्य का एक उदाहरण अमरकान्त का यह उपन्यास बन गया है जो अपने लोगों के सामूहिक-जातीय स्वरों की पहचान करता है और उन्हें दर्ज करता है।

उनके अन्य छोटे उपन्यास भी उत्तर भारत के जनजीवन की अनेक व्याधियों और यहाँ के लोगों की चित्तदशाओं को बताते हैं। स्त्रियों की दुर्दशा उन्हें बहुत विचलित करती है और उनका समूचा कथा साहित्य सबल स्त्री व्यक्तित्व की कामना करता है। 'ग्रामसेविका' जैसा छोटा उपन्यास गाँवों में औरतों की स्थिति को ही नहीं बताता बल्कि यह आदर्श भी रखने का प्रयास करता है कि वास्तव में एक स्वस्थ समाज में स्त्रियों की भूमिका कैसी होनी चाहिए। समग्रता में उन्होंने इस उपन्यास में लिखा है, ''एक नयी रोशनी से सदियों के अंधकार को दूर करने की कोशिश की जा रही है। गाँवों में एक नयी क्रान्ति हो

रही है। इस क्रान्ति में हरेक को भाग लेना है। जब तक हमारे गाँव की गरीबी दूर नहीं होगी हमारा देश मजबूत और खुशहाल नहीं हो सकता। यह गरीबी तभी दूर होगी जब ग्रामीण अपने खेतों में खूब मेहनत करेंगे....नये वैज्ञानिक ढंग पर खेती करेंगे। इसके लिए जरूरी है कि उनके बच्चे पढ़ें, उनकी स्त्रियाँ पढ़ें, हर चीज को समझने के लिए शिक्षा बहुत जरूरी है।'' उनके एक और छोटे उपन्यास 'विदा की रात' को अमरकान्त ने देश-विभाजन पर केंद्रित किया है, ''हिन्दुस्तान का बँटवारा इस उसूल पर हुआ कि हिन्दू और मुसलमान एक देश के बाशिन्दे नहीं, बल्कि दो अलग-अलग मुल्क हैं और मुसलमानों को हिन्दुओं से अलग एक मुल्क यानि पाकिस्तान दे देना चाहिए। यह उसूल था और इसकी अमली सूरत क्या हो सकती थी, जबकि समूचे हिन्दुस्तान में हिन्दू और मुसलमान अलग-अलग बसे हैं। असली सूरत या कोई वाजिब स्कीम किसी के पास थी ही नहीं। बस अमली सूरत निकाली अंग्रेजों ने। यह बन्दरबाँट उन्होंने ने ही कराई क्योंकि फौजी ताकत उन्हीं के पास थी, स्कीम उन्हीं के पास थी, हमारे हिन्दुस्तानी लीडरों, चाहे कांग्रेस हो, चाहे मुस्लिम लीग, हिन्दू-सभा हो या डॉ. अम्बेडकर हो या दूसरे हिन्दू-मुस्लिम नेता हों, किसी के पास कोई स्कीम थी ही नहीं। सियासत के बिसात पर अंग्रेजों ने अपने मोहरे ऐसे चले कि हमारे सभी लीडर, जो उनके पास आजादी के लिए समझौता करने गये थे, बुरी तरह मात खा गये और एक ऐसी स्कीम को मंजूरी दे बैठे, जिसकी वजह से उस समय तो तबाही हुई ही थी, आगे का भी मंजर वैसा ही दिखाई देता है।'' सही बात है कि भले ही 1947 में हमारे देश का विभाजन हो गया लेकिन इसके घाव अभी भी टीस देते हैं।

×× ×

हार्दिक संतोष और प्रसन्नता की बात है कि अमरकान्त जी के जन्म शताब्दी वर्ष की शुरुआत में ही 'बनास जन' का यह विशेषांक पाठकों की सेवा में प्रस्तुत हो रहा है। अंक को तैयार करने में अनेक मित्रों ने सहयोग दिया। रचनाकार साथियों ने आग्रह पर लेख भेजे और कुछ मित्रों ने अपने संग्रह से अमरकान्त जी की चिट्ठियाँ भी भिजवाईं। अमरकान्त बड़े रचनाकार हैं और उनके शताब्दी वर्ष में ऐसे अनेक आयोजन होंगे। आशा है पाठक इस अंक को पसंद करेंगे और इस वर्ष से अमरकान्त जी की रचनाओं को फिर से पढ़ने-समझने का नया सिलसिला प्रारम्भ होगा।

पल्लव